

हर बार की तरह इस बार भी हम ऐसी ही कुछ उम्मीदों के साथ अपने को दिशा दे रहे होंगे, क्योंकि जो होता आया है उससे अच्छा होगा, इसी उम्मीद से हम हर बार कदम बढ़ाते हैं। कदम जब कहीं थोड़ा रुकते हैं, तो हम सोचते, शायद इस बार यहाँ पर गलती हो गई। चलिए खैर, ये सब तो हमारी उलझन व फितरत है अपने हिसाब से उम्मीदों को जगाने की, लेकिन कुछ अच्छा, इसकी आश आपको जीने अवश्य देगी।

हम हर पल घट रहे हैं, आप चाहे मानो या ना मानो आप जो 10 मिनट पहले

## नववर्ष अच्छा ही होगा!

थे, वो दस मिनट बाद नहीं होंगे। ऐसी बात सुनाओ जिसमें जीवन का पिछला कल और आने वाला कल सार हो, तो पता है बीरबल ने क्या

दोनों के साथ ही तो आप जी रहे हो। चिंता है तो कल की, जो बीत गया। तो आपका तो हर दिन ही नव वर्ष है। लेकिन उसको जीना, उसको समझना हमारे समझ से परे है। अब जब आप ही कहते हो कि जीवन रैन बसेरा है, कि असलीयत कुछ और है, उम्मीदों के सहारे हर बार हम इंतजार में बिता देते हैं कि इस बार ऐसा, इस बार ऐसा। अरे भाई, हर बार इस बार ही है! आपको हम याद दिला दें कि जब अकबर ने बीरबल से पूछा कि कोई



कहा, 'ये वक्त भी गुजर जायेगा'। ना वक्त ठहर रहा है और ना बातें ठहर रही हैं, लेकिन हम उसे ठहराने का प्रयास कर रहे हैं। कहने का भाव है कि सब कुछ बदल रहा है, यदि कुछ नहीं बदल रहा है तो वह है आपकी हमारी यादें। उन यादों में यदि

कुछ अच्छी व सुनहरी यादे हैं, तो वो आपको सुख देंगी, लेकिन जिन यादों से आपको दुःख मिलता है उसे क्यों याद करना है? लेकिन हम तुलना करते हैं, नहीं पिछली बार से अच्छा करने हैं, नहीं पिछली बार से अच्छा नहीं पाए। अब हमें करना क्या है कि हमें यादों को यादगार बनाना है। उसके लिए कुछ ऐसा करना है, कुछ अलग करना है, कुछ बेहतरीन करना है। ज़िन्दगी बेहतर होती है, जब आप खुश होते हैं, लेकिन ज़िन्दगी बेहतरीन तब होगी जब आपकी वजह से लोग खुश होंगे।

तो इस बार आपको लक्ष्य मिल गया है कि आपको अपने को इतना शक्तिशाली बनाना है कि आपसे किसी को भी किसी तरह का दुःख ना मिले। हम ये नहीं कह रहे हैं कि एकाएक यह सारा कुछ होगा, लेकिन यादों को यादगार बनाने के लिए खुद को याद

दिलाना है कि मुझे कुछ अच्छे से अच्छा करना है। उसके लिए अपने



ब्र.कु. अनुज, दिल्ली

आपको मूल्यों व मानदंडों पर चलाना होगा। सोचिए ज़रा लोग अपनी-अपनी योग्यता के आधार से पद पाते हैं और पद के आधार से ही खुश होते हैं। ज़िन्दगी भर वो इसी खुशी की तलाश में ही रहे हैं, लेकिन आपको पता हो कि खुश वो हैं, जो खुशी बांट रहे हैं। तो इस नव वर्ष में आपको खुशी बांटनी है, इस लक्ष्य के साथ ही नव वर्ष की शुरुआत करनी है। शायद आप भी उस लिस्ट में शामिल हो जाएं जिसमें हम हैं...

आप सभी को आने वाले नव वर्ष की ढेर सारी बधाइयाँ....

**प्रश्न:** बापदादा कहते हैं कि विनाशकाल में आठ प्रकार के पेपर आयेंगे - वह कौन-कौन से पेपर हैं तथा उन्हें पास करने के लिए हमें क्या पुरुषार्थ करना होगा ?

**उत्तर:** विनाशकाल एक अति भयानक घटना होगी। इसमें मनुष्य पिस जायेगा। साधन और मनुष्य उसका साथ छोड़ जाएंगे। विश्व बदलेगा, नया बनेगा, इसमें भयानक परिवर्तन आयेगा। जिनकी स्थिति श्रेष्ठ होगी, उन पर विनाश का प्रभाव नहीं आयेगा।

पहला - प्रकृति के पेपर... जल व अग्नि अति विनाशकारी दृश्य सामने लायेंगे। प्रकृति के पाँचों ही तत्व भयानक रूप से वार करेंगे।

दूसरा - पाँचों विकारों से पेपर... जिसमें जिस विकार का अंश रह जाएगा वह अंश उस समय वंश में बदल जायेगा।

तीसरा - सम्बन्धों के पेपर... सम्बन्धों में टकराव बढ़ेगा, परंतु विनाशकाल में मोह के पेपर ज़्यादा आयेंगे।

चौथा - बीमारियों के पेपर... शारीरिक व मानसिक बीमारियाँ असाध्य हो जाएंगी व कोई किसी को देखने वाला नहीं रहेगा।

पाँचवा - अपने संस्कारों के पेपर तथा दूसरों के संस्कारों से टकराव के पेपर... जो भी कड़ा संस्कार किसी में रह जायेगा उसी का कष्ट कारण स्वरूप बन जायेगा।

छठवां - भटकती हुई आत्माओं व तंत्र-मंत्र के पेपर... अकाले मृत्यु के कारण अनेक आत्माएं भटक जाएंगी, वे वार करेंगी व अपना बुरा प्रभाव डालेंगी।

सातवां - गृह युद्ध व विश्व युद्ध के पेपर।

आठवां - सरकार की ओर से पेपर व धन आदि के पेपर।

इन सभी पेपर में वही फुल पास हो सकेंगे जिन्होंने स्वयं को ज्ञान-बल, पुण्यों का बल से भरा होगा व स्मृति स्वरूप होने का अभ्यास बहुत समय तक किया होगा।

**प्रश्न:** स्वदर्शन चक्र का क्या मतलब है? ये कैसे घूमता है?

**उत्तर:** स्वदर्शन चक्र हम भक्ति मार्ग के चित्रों में या तो देवी-देवताओं के हाथों में देखते हैं। खास तौर

पर श्रीकृष्ण और विष्णु के हाथ में। पर भक्ति में समझते थे कि स्वदर्शन चक्र एक शस्त्र है जिसको गुस्सा आने पर श्रीकृष्ण और विष्णु असुरों का गला काटने के लिए चलाते थे।

अब ज्ञान स्वयं परमात्मा ने बताया है कि यह स्वदर्शन चक्र संगम पर ब्रह्मा मुखवंशावली ब्राह्मणों का है। देवतायें कोई हिंसा नहीं करते थे न ही सतयुग में कोई असुर होता है जिसका गला काटना पड़े। यह तो संगम पर हम ब्राह्मण स्व का दर्शन माना आत्मा



मन की बातें

ब्र.कु. सूर्य

के आदि मध्य अंत में ये पार्ट, जो रोल इस बेहद की सृष्टि चक्र रूपी ड्रामा में निभाते हैं उसको देखते हुए स्व में परिवर्तन करना और आत्मा की मूल शक्तियों और गुणों को धारण करते जाना।

परमात्मा ने जो हमें ज्ञान दिया है उस आधार पर हम स्वयं की चेकिंग करते हुए इस चक्र को फिराते हुए जो आत्मा के अंदर द्वापर से लेकर 63 जन्मों में विकार पैदा हो गए हैं, उन असुरों (काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार) का गला काटना है।

जितना हम स्वदर्शन चक्र सारा दिन में घुमाएंगे उतना ही आत्मा में शक्ति और ज्ञान का तेज बढ़ता जायेगा।

हर कर्म में आदि मध्य अंत के गुणों और शक्तियों की स्मृति होगी। जिससे कर्म में सफलता होगी। दूसरा संगम युग में माया का जो वार होता है वो स्वदर्शन चक्र घुमाने से ही छूटता है। इसके लिए शस्त्रों में गज और ग्राह की कथा भी लिखी हुई है।

इसलिए आत्मा को अगर कर्मन्द्रियों का राजा बनाना है और भविष्य राज्य पद के अधिकारी बनना है तो स्वदर्शन से ही बन सकते हैं।

**कैसे घुमाएं स्वदर्शनचक्र- बिन्दु रूप स्थिति -**

आत्मा को परमधाम में निराकारी स्थिति में अपने परमात्मा पिता के साथ कर्मातीत अवस्था में देखना है।

देव स्वरूप - सतयुग नई दुनिया में डबल ताजधारी - 16 कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी, अहिंसा परमोधर्म, मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में देखना है।

पूज्य स्वरूप - फिर इमर्ज करना है मंदिरों में इष्ट स्वरूप में खड़े हैं। भक्त हमा आह्वान कर रहे हैं। बाबा हमारे उन भक्तों की आश पूरी कर रहे हैं। मैं अपने नैनों द्वारा उनको सकाश दे रही हूँ कि वो भी बाबा से आकर वर्षा लें।

ब्राह्मण स्वरूप - खुद को कल्प वृक्ष की जड़ों में ब्रह्मा बाबा के साथ पवित्रता का सकाश फैलाते हुए महसूस करो।

फरिश्ता - माना फर्श से कोई रिश्ता न रहे। लाइट और माइट का स्वरूप। शिव बाबा से शक्ति लेकर अपने सूक्ष्म स्वरूप द्वारा सृष्टि को पावन बनाने का कार्य करना है।

हमारे सभी स्वरूप देखा जाये तो पवित्र स्वरूप हैं और हमेशा देने के संस्कारों वाले। तो स्वदर्शन हमें पवित्र और वरदानी मूर्त बना देता है।

**प्रश्न:** बाबा ने बिंदु रूप होने को कहा है, हम क्या करें? बुद्धि स्थिर नहीं होती। इसका कोई उपाय बतायें।

**उत्तर:** मैं आत्मा बिंदु, शिवबाबा बिंदु और जिसको भी देखो वह भी बिंदु।

ये अभ्यास सारे दिन में करते रहना चाहिए। इससे धीरे-धीरे मन का भटकना बंद होने लगेगा और देह-अभिमान भी छूटने लगेगा।

स्वयं को भूकटि के मध्य चमकती हुई मणि देखो। कम से कम एक बार में दस सेकण्ड तक देखने का अभ्यास करें।

योग का सीधा संबंध पवित्रता से है। जिनके पास अपवित्रता ज़्यादा है वे योगी नहीं बन सकते। देह को देखने की आदत भी योगी बनने नहीं देगी। इसलिए श्रेष्ठ योगी बनने वालों को पवित्रता को सुदृढ़ करना चाहिए तथा योग के विभिन्न मनोरंजक अभ्यास करने चाहिए।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

Peace of Mind

DD इन्फोकॉम  
फ्री दूरदर्शन के  
DTH पर  
GOD TV में  
और DISHTV

पर GODTV चैनल पर भी फ्री पीस और माईड चैनल शाम को 7.30 pm से 10.00pm तक देख सकते हैं अधिक जानकारी के संपर्क करें...

Cell: 8104 777111/ 941415 1111

7 कदम राजयोग की ओर...

कथा सरिता

राजयोग

कथा सरिता

हैपिनेस इन्डेक्स

कथा सरिता

संस्कृत का कला

दीप प्रस्ताव

गीता ज्ञान का आध्यात्मिक रहस्य

राजयोग मेडिटेशन

मन की बातें

For Cable & DTH  
+91 8104777111

TATA SKY 192

airtel digital TV 686

VIDEOCON 497

RELIANCE Digital TV 171

Peace of Mind

"C" Band, MPEG4 DVB-S2 Receiver-FRQ: 4054, POL: H, SYM: 13230, INSAT: 4A, DEG:83\*E